पुरातत्त्व की दृष्टि में मिथिलापुरी : बलिराजगढ़

शिव कुमार मिश्र *

भारत-नेपाल सीमा के निकट बिहार के उत्तरी भाग में करीब दो सौ एकड़ का एक विशाल भू-भाग है जिसे लोग बलिराजगढ़ (मधुबनी जिला) या बलीगढ़ या बलराजगढ़ के नाम से जानते हैं। यद्यपि यह स्थल बिहार के अन्य प्राचीन स्थलों से अधिक आकर्षक है किन्तु इसके ऐतिहासिकता के लिए सामग्रियों का सर्वथा अभाव है। बिहार एवं मिथिला के इतिहास लेखकों में इस स्थल के प्रति कोई विशेष अभिरूचि नहीं मिलती है। अभी तक इस स्थल का पुरातात्त्विक उत्खनन कार्य तीन बार हो चुका है। यद्यपि पुरातात्त्विक दृष्टिकोण से ये उत्खनन अत्यल्प एवं अपूर्ण रहे हैं किन्तु इससे प्राप्त पुरावशेष मिथिला एवं बिहार की गौरवशाली संस्कृति को प्रतिबिम्बित करती है।

बलिराजगढ़ की ऐतिहासिकता पर मतैक्य नहीं है। स्थानीय परम्परानुसार यह महाकाव्यों एवं पुराणों में वर्णित दानवराज बली की राजधानी का ध्वंशावशेष है किन्तु पुरातात्त्विक उत्खननों से जानकारी मिलती है कि इसका निर्माण दूसरी सदी ई.पू. में हुआ था।[१] इस प्रकार स्थानीय परम्परा को सही मानना अनुचित होगा। ओ मैले के अनुसार स्थानीय लोगों का विश्वास था कि इस समय भी राजा बल अपने सैनिकों के साथ इस किले में रहते हैं। और इसी सम्भावना के भय से कोई भी इस भूमि को खेती के लिए जोतने की हिम्मत नहीं करता था। वे केवल दिन में मवेशियों को इस भूमि पर चराते थे किन्तु रात को इसे देखने से भी डरते थे। इस तरह प्रचलित अफवाहों के चलते इस भूमि एवं किला की सुरक्षा अपने-आप होती रही। उन्होंने आगे लिखा है कि एक अनुमण्डलाधिकारी ने इस गढ़ का उत्खनन कराना आरम्भ कराया किन्तु वह गम्भीर रूप से बुखार से पीड़ित हो गया। जिससे लोगों में यही अवधारणा बनी कि राजा बल ने ही उसे बीमार कर दिया है।[२] बुकानन के अनुसार बेणु, बरिजन एवं सहसमल का चौथा भाई बल एक राजा था। इन चारों भाइयों ने एक-एक किला बनवाया जो उनके नामों से जाना जाता है। इन्हीं किलाओं में से बलिराजगढ़ भी एक है। बुकानन के अनुसार वे लोग डोमकटा ब्राह्मण थे, जो **महाभारत** में वर्णित राजा विराट के बाद तथा युधिष्ठिर के समकालीन थे।[३] लेकिन इस मत को स्वीकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि अन्य किलाओं से बलराजगढ़ बहुत दूर है साथ ही सहसमल के किले की पहचान अभी तक नहीं की जा सकी है।[४] एक अन्य विद्वान ने इस गढ़ को विदेहराज जनक के अन्तिम सम्राट द्वारा निर्मित माना है। उनके अनुसार जनक राजवंश के अन्तिम चरण में आकर जनकवंश कई शाखाओं में बँट गया

---

* बिहार रिसर्च सोसायटी, संग्रहालय भवन, पटना

और उन शाखाओं का शासन विदेह राज्य के अन्तर्गत ही विभिन्न भुखण्डों पर रहा होगा और यह गढ़ उन्हीं में से किसी एक शाखा द्वारा बनवाया गया किला का ध्वंशावशेष है। उनके अनुसार किसी बलवान राजा द्वारा निर्मित कराने के कारण ही इस किला का नाम बलीगढ़ पड़ा।[५] किन्तु इस मत के लिए ऐतिहासिक तथ्यों का सर्वथा अभाव है। प्रो. उपेन्द्र झा ने बलिगढ़ का उल्लेख करते हुए लिखा है कि प्रख्यात चीनी यात्री ह्वेनसांग ने तीरभुक्ति भ्रमण के क्रम में वैशाली गए तथा वैशाली से चेन-सु-ना सम्भवतः बलिगढ़ गए और वहाँ से बड़ी नदी अर्थात् महानन्दा के निकट गए।[६]

बलिराजगढ़ की ऐतिहासिकता के लिए एक तर्क यह है कि विदेह राज जनक की राजधानी अर्थात् **रामायण** में वर्णित मिथिलापुरी यहीं स्थित थी। यद्यपि मिथिलापुरी की समता आधुनिक जनकपुर (नेपाल) से की गई है किन्तु-पुरातात्त्विक सामग्रियों के अभाव में इसे सीधे मान लेना कठिन है। अन्यान्य विद्वानों ने भी आधुनिक जनकपुर को प्राचीन मिथिलापुरी मानने से इन्कार किया है। **रामायण** के अनुसार राम, लक्ष्मण एवं विश्वामित्रजी गौतम-आश्रम से ईशानकोण की ओर चलकर मिथिला नरेश के यज्ञमण्डप पहुँचे।[७] गौतमआश्रम की पहचान दरभंगा जिले के ब्रह्मपुर गाँव से की गई है।[८] जिसका उल्लेख **स्कन्दपुराण** में भी मिलता है।[९] आधुनिक जनकपुर गौतम आश्रम अर्थात् ब्रह्मपुर से ईशानकोण में न होकर उत्तर दिशा में है। इस तरह गौतम आश्रम से ईशानकोण में बलिराजगढ़ को छोड़कर कोई ऐसा ऐतिहासिक स्थल नहीं दिखाई देता है जिसपर प्राचीन मिथिलापुरी होने की सम्भावना व्यक्त किया जा सके। पुनः पुरातात्त्विक उत्खननों के रिपोर्टों से ऐसी सूचना मिलती है कि पानी की सतह ऊँची रहने के कारण पूर्ण उत्खनन नहीं हो सका फिर भी तीसरी शताब्दी ई.पू. के पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। इसलिए ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि पूर्ण उत्खनन होने पर तीसरी शताब्दी ई.पू. से पहले की सामग्री भी निश्चित रूप से प्राप्त हो सकती है। अब गौतम आश्रम से ईशानकोण में इस तरह के पुरावशेष अन्य स्थानों से नहीं प्राप्त हुए हैं अतः बलिराजगढ़ के पक्ष में ऐसा तर्क दिया जा सकता है कि बाल्मीकि की मिथिलापुरी इसी स्थल पर स्थित थी।

पालि साहित्य में कहा गया है कि अंग की राजधानी चंपा (आधुनिक भागलपुर) से मिथिला नगर की दूरी साठ योजन थी।[१०] महाउम्मग्ग जातक के अनुसार नगर के चारों द्वारों पर चार बाजार थे जिसे यवमज्झक कहा जाता था।[११] भिक्षा के लिए पाँच घर बनवाए गए थे जो चारों द्वारों पर एवं नगर के बीच मे अवस्थित थे। नगर को चारों तरफ से पार करने के लिए गलियारे बने हुए थे। **जातकों** में दीवारों, द्वारों एव परकोटों का भी उल्लेख मिलता है। राजा ऊपर के महल में रहते थे। महल में हवा आने के लिए पूरब से खिड़की रहता था।[१२] इन प्रमाणों से स्पष्ट होता है कि बौद्धकाल में मिथिला नगर बहुत विकसित था। और इस तरह के विकसित नगर का पुरावशेष मिथिलांचल में अन्यत्र कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता। अतः इस आधार पर भी कहा जा सकता है कि बौद्धकालीन मिथिलानगर का ध्वंशावशेष भी बलिराजगढ़ ही है।

महाभारत में मिथिला के अन्तिम राजा कराल जनक का उल्लेख है[१३] तथा बौद्ध साहित्य में कलार जनक का उल्लेख है।[१४] सम्भवतः दोनों एक ही था। कलार जनक का समय आठवीं शताब्दी ई.पू. माना गया है। बौद्धग्रन्थ **दीपवंश** से संकेत मिलता है कि कलार जनक के पश्चात् उसके वंश के पच्चीस राजाओं

ने मिथिला नगर पर शासन किया किन्तु इन राजाओं के नामों का उल्लेख नहीं किया गया है। प्रोफेसर योगेन्द्र मिश्र ने भी कलार जनक के पश्चात् इक्कीस राजाओं द्वारा मिथिला पर शासन करने की बात स्वीकार की है।[१५] उनके अनुसार कराल जनक के पश्चात् ई.पू. ३४७ तक विदेह में राजतन्त्र स्थापित था।[१६] ऐसा लगता है कि ई.पू. चौथी सदी के पश्चात् विदेह राज्य का क्षेत्र छोटा हो गया तथा छोटे-छोटे राजा इसपर शासन करने लगे। बलिराजगढ़ के अल्प उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों से इस बात की पुष्टि होती है कि इन कालों में भी प्रशासन का केन्द्र यहीं रहा। साथ ही मौर्य, गुप्त एवं बाद के समयों के प्राप्त पुरावशेषों सें भी यह बात साबित होती है कि बलिराजगढ़ इन कालों में प्रशासनिक केन्द्र रहा तथा यहाँ एक विकसित एवं सुव्यवस्थित नगर बना रहा।

बलिराजगढ़ की ऐतिहासिकता के विषय में पुरातात्त्विक उत्खननों से प्राप्त पुरावशेषों से महत्वपूर्ण जानकारी मिलता है। सर्वप्रथम आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया के मध्य-पूर्वी अंचल द्वारा १९६२-६३ ई. में एक लघुस्तर का उत्खनन कराया गया।[१७] रिपोर्ट के अनुसार सुरक्षा दीवार मिट्टी की ईंटों से निर्मित है तथा ऐसा लगता है कि इसका निर्माण दूसरी शताब्दी ई.पू. में हुआ जिसका उपयोग पालवंश के समय तक हुआ। दीवार का निर्माण एवं मरम्मत कार्य तीन चरणों में हुआ। ऐसा लगता है कि किसी भीषण बाढ़ में दीवार क्षतिग्रस्त हो गया जिसका पुनर्निर्माण कराया गया हो। रिपोर्ट के अनुसार सिक्के, हड्डियों के औजार, मनके, शुंगकालीन मिट्टी से निर्मित मूर्तियों के फलक तथा एक मन्दिर का भग्नावशेष आदि प्राप्त हुए हैं। प्राप्त फलकों[१८] के चित्र 1A में बाएँ सिर कटी हुई महिला तथा दाएँ पुरुष के सिर का फलक है। पुरुष के सिर पर पगड़ी तथा आभूषण दिखाई दे रहे हैं। महिला का चित्र भी आभूषणों से सुसज्जित मालूम होता है। चित्र 1B किसी देवता का फलक जैसा मालूम होता है। चित्र 1C मिथुन फलक है इसमें मकर का चित्र भी नीचे से दिखाई देता है जिससे किसी देवी का फलक होने की सम्भावना लगती है। गंगादेवी का वाहन मकर है फिर भी इस फलक के लक्षणों से गंगादेवी के फलक की संज्ञा देना सम्भव नहीं जान पड़ता। लक्षणों से यह मिथुन फलक जैसा ही मालूम पड़ता है जिसका सिर चित्र 1A के सिर से मिलता है। मिथुन फलक आभूषणों एवं वस्त्रों से सुसज्जित दिखाई देता है। सिर पर बड़ी पगड़ी तथा गले में हार है, हाथ में कोई अस्त्र जैसा मालूम होता है। फलक का दूसरा भाग टूटा हुआ मालूम पड़ता है किन्तु फलक पर बारीकी से कारीगरी की गई है। 1D चित्र में बाएँ से एक महिला एक बच्चा को अपनी गोद में लेकर खड़ी है। इसे 'अंक धात्री' का फलक माना जा सकता है। दाहिनी ओर की फलक में एक महिला एक बच्चा की गोद में लेकर खड़ी है। बच्चा का बायाँ हाथ महिला के बाएँ स्तन को स्पर्श कर रहा है जिससे स्पष्ट होता है कि माँ एवं बच्चा का यह फलक है जिसे 'क्षीर धात्री' की संज्ञा दी जा सकती है। इस फलक की महिला का सिर टूटा हुआ है तथा गर्दन में एक सुन्दर हार है जो दोनों स्तन को स्पर्श करती हुई नीचे तक लटकती है। अंक धात्री का सिर साड़ी से ढ़का हुआ है तथा ललाट में बिन्दी जैसा मालूम होता है। इससे ऐसा संकेत मिलता है कि उसी काल से मिथिला की नारियों में सिर पर साड़ी लेने एवं बिन्दी करने की परम्परा कायम है।

पुरातत्त्व एवं संग्रहालय निदेशालय बिहार, पटना, के तत्त्वावधान में १९७२-७३ में दूसरी बार उत्खनन कार्य चलाया गया। इस रिपोर्ट[१९] के अनुसार किले की सुरक्षा-दीवार का निर्माण दो चरणों में कराया गया। पहले चरण में ५०x२०x४ से.मी. आकार के बड़े ईटों का प्रयोग किया गया था। ऐसा लगता है कि असली दीवार किसी भीषण बाढ़ में क्षतिग्रस्त हो गया जिसे बाद में पुनर्निर्माण कराया गया। असली दीवार उत्तरी-कृष्ण-मार्जित (एन.बी.पी.) मृदभाण्ड के टुकड़े मिले हैं जिससे ऐसा अनुमान लगाया गया है कि दूसरी सदी ई.पू. में इसका निर्माण हुआ था। रिपोर्ट के अनुसार दो सांस्कृतिक कालों के पुरावशेष मिले हैं। प्राप्त पुरावशेषों में हड्डी की कीलें, कान्ति-ताम्र सिक्के, ताम्बे और एन्टीमनी छड़े, मिट्टी की पकी हुई गोलियाँ एवं मनके, स्वस्तिक चिह्न के साथ एक सील, एक लोहे का कुल्हारी एवं अत्यन्त सुन्दर तथा अर्द्ध-कीमती पत्थरों के मनके आदि है। इन पुरावशेषों के साथ-साथ उत्तरी-कृष्ण-मार्जित मृदभाण्ड (एन.बी.पी. वेयर) एवं धूसर और लाल मृदभाण्ड के टुकड़े मिले है। रिपोर्ट के अनुसार मिट्टी से निर्मित कुछ मूर्तियों के फलक प्राप्त हुए है जो दूसरी सदी ई.पू. से दूसरी सदी ई. के हैं किन्तु एक पुरातत्त्वविद्[२०] इसे शतप्रतिशत सही नहीं मानते हैं। उनके अनुसार चित्र 2A में सबसे ऊपर बीच का फलक गुप्तकाल (पांचवीं-छठी सदी ई.) का है एवं ऊँगलियों से बनाया गया है। सबसे नीचे बायीं ओर का फलक किसी महिला का है जिसका समय गुप्तकाल में रखना उचित होगा। चित्र 2A में दाहिनी ओर के फलक को किसी बौने का फलक कहा गया है[२१] किन्तु इस फलक में चित्र को नंगा दिखाया गया है जो किसी बौना के लिए सम्भव नहीं है अत: यह किसी बच्चा के चित्र का फलक है। इस चित्र में बच्चा हँस रहा है जिससे उसके कुछ दाँत स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रहे हैं। बच्चा की कमर में चौड़ी कमरबन्द, बाँहों में भुजबन्द तथा पाँवों में चौड़ी पट्टियाँ हैं तथा हाथों में कोई एक लम्बा वस्तु या खिलौना है। इसका काल दूसरी सदी ई.पू. न होकर छठी सदी ई. मानना उचित होगा। चित्र 2B के मूर्तियों को भी दूसरी शताब्दी ई.पू. से दूसरी सदी ई. के बीच का माना गया है[२२] जबकि सबसे नीचे हाथी (बाएँ का चित्र) के मूर्त्ति का काल तीसरी सदी ई.पू. अर्थात् उत्तर मौर्यकाल में रखा जा सकता है। इस चित्र में अन्य मूर्तियाँ भेंड़, सांड़ आदि जानवरों का है। इसी उत्खनन में दूसरे काल अर्थात् २००ई. से ६००ई. तक के भी पुरावशेष मिले हैं जिनमें मिट्टी से निर्मित पशुओं की मूर्तियाँ, पत्थरों के मनके, मिट्टी की पकी हुई गोलियाँ एवं वृत्ताकार छिद्रयुक्त आयताकार खपड़े आदि प्रमुख है। इस दूसरी सतह की मोटाई १.६० मीटर है।[२३]

१९७४-७५ ई. में भी इसी विभाग के द्वारा उत्खनन कार्य कराया गया।[२४] इस वर्ष भी पानी के ऊँची सतह के कारण पूर्ण उत्खनन कार्य नहीं हो सका। पहले की भाँति सांस्कृतिक कालों की जानकारी इस वर्ष भी मिली। पहले काल में पुरुष एवं महिला के चित्रों के फलक, पशुओं एवं जानवरों के चित्रों के फलक मिले हैं। अन्य महत्वपूर्ण पुरावशेषों में मिट्टी के पके हुए पहिए, टूटे हुए खिलौने के गाड़ी, कापर-एन्टीमनी छड़, लोहे की कीलें तथा विभिन्न अर्द्ध कीमती (अर्द्ध-बहुमूल्य) पत्थरों से निर्मित विभिन्न आकार के मनके आदि मिले हैं। इस सतह से उत्तरी-कृष्ण-मार्जित मृद्‌भाण्ड तथा धूसर एवं लाल मृद्‌भाण्ड के टुकड़े मिले हैं जिनके कंधे पर नक्काशी के चित्र मिलते है। पहले उत्खनन की भाँति खपड़े भी मिले हैं। दूसरे सांस्कृतिक काल के पुरावशेषों में, मिट्टी से निर्मित जानवरों के मूर्तियाँ, पत्थरों के मनके, मिट्टी

की पकी हुई मनके एवं गोलियाँ, मृद्भाण्ड के टुकड़े आदि मिले हैं। इस उत्खनन से प्राप्त मिट्टी से निर्मित मूर्तियों के फलक चित्र 3A एवं 3B में हैं। इन्हें शुंगकालीन माना गया है।[२५] किन्तु चित्र 3A का बीच वाला मूर्ति गुप्तकालीन है। यह मूर्ति अजमुखी नैगमेष की है। नैगमेष को संतानदायिनी देवी 'षष्ठी' का पति कहा गया है।

इस प्रकार इन उत्खनन कार्यों के रिपोर्टों से हमें स्पष्ट रूप से दो सांस्कृतिक कालों की जानकारी मिलती है। पहले काल के अन्तर्गत तीसरी सदी ई.पू. से दूसरी शताब्दी ई. सन् तक एवं दूसरे काल के अन्तर्गत दूसरी शताब्दी ई. से छठी शताब्दी ई. तक के पुरावशेष मिलते हैं। गढ़ की सुरक्षा-दीवार का निर्माण दो चरणों में हुआ था। प्रथम चरण ५०x२०x४ से.मी. माप के ईंटों का प्रयोग हुआ है जबकि दूसरे चरण में ४०x२०x२ से.मी. माप का। यद्यपि उत्खनन कार्य एक बहुत ही कम स्थान पर किया गया है किन्तु उससे बड़े ही महत्वपूर्ण पुरावशेष मिले हैं। प्रथमकाल के अन्तर्गत लगभग दो मीटर मोटी सतह मिलती है जिसमें पक्की ईटों से निर्मित आवासीय मकानों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इसमें एक कूआँ मिला है जिसका व्यास १.४० मीटर है तथा यह फनाकार ईटों से निर्मित है। एक मण्डल-कूप (रिंगवेल) भी मिलता है जिसके व्यास का माप १.२५ मीटर है। इसके निर्माण में फनाकार ईंटों का प्रयोग किया गया है जिसकी लम्बाई २४ से.मी. तथा एक ओर की चौड़ाई १९ से.मी. और दूसरी ओर १५ से.मी. चौड़ी है। ये ईंट २.५ से.मी. मोटी है। बड़ी संख्या में खण्डित खपड़े मिलते हैं जो तत्कालीन खपड़ों की अच्छी बनावटों की सूचना देती है। ये आयताकार खपड़े एक तरफ बक्र है जिससे ऐसा मालूम होता है कि इसे बन्धक विधि के द्वारा जोड़ा जाता था। मिट्टी से निर्मित पुरुष एवं स्त्री दोनों की ही मूर्तियाँ एवं फलकें मिलती हैं। ये मूर्तियाँ एवं फलकों के चित्र आभूषणों से सुसज्जित हैं तथा केश-विन्यास अनोखे ढ़ंग से किए गए हैं। केश बाँधने का तरीका भी अत्यन्त ही सुन्दर है जिससे तत्कालीन समाज के शृंगार के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। विभिन्न प्रकार के आभूषणों, जो मूर्त्तियों पर मिलते हैं, वे तत्कालीन मूर्त्तिकारों की ही कुशलता को नहीं दर्शाती है बल्कि विभिन्न प्रकार के स्वर्णकारों की कुशलता को भी स्पष्ट करते हैं। बिना फलक वाले मूर्त्तियों के केश-विन्याश एवं कलाकृति तत्कालीन सामाजिक लोगों के शारीरिक अंगों को भी प्रतिबिम्बित करती है। पशुओं एवं जानवरों की मूर्तियों, जिसमें अधिकांशत: सांड़ों एवं भेड़ों की मूर्त्तियाँ मिलती हैं। इससे तत्कालीन कृषि व्यवस्था तथा पशुपालन कार्य प्रतिबिम्बित होता है। इन पुरावशेषों के अलावा मिट्टी की पकी हुई गोलियाँ एवं मनके आदि मिलते हैं जिसमें ऐसा कहा जाता है कि बड़े गोलियों का प्रयोग युद्ध एवं बड़े जानवरों के शिकार के लिए किया जाता था जबकि छोटे गोलियों का प्रयोग सम्भवत: छोटी पक्षियों एवं छोटे जानवरों को चोट पहुँचाने के लिए किया जाता था। मिट्टी की पकी हुई मनके का प्रयोग सम्भवत: पशुओं को माला बनाकर पहनाने में किया जाता था।[२६] हड्डियों के कीलों का प्रयोग जानवरों का शिकार करने तथा मछलियों को मारने में किया जाता था।

उत्खनन से अनेक प्रकार के पत्थरों के मनके मिले हैं। इन पत्थरों में गोमेद, स्फटिक, जैस्पर, पुष्पराज (टोपैज), कार्नेलियन आदि प्रमुख हैं। मनकों का प्रयोग महिलाएँ माला बनाकर पहनने में करती थीं। उत्खनन

से उत्तर-कृष्ण-मार्जित मृद्भाण्ड के टुकड़े के साथ ही धूसर एवं लाल मृद्भाण्ड के टुकड़े भी मिले हैं किन्तु पूरे सतह पर लाल मृद्भाण्ड के उद्योग होने का प्रमाण मिलता है। उत्तरी-कृष्ण-मार्जित मृद्भाण्ड के टुकड़ों में तस्तरी एवं कटोरे के आकार का ढाँचा मिलता है जो अत्यन्त ही सुन्दर हैं। काले, सुनहले एवं चाकलेट रंग में रंगे हुए मृद्भाण्ड के टुकड़े भी मिले हैं। काला एवं धूसर मृद्भाण्ड एवं उत्तरी-कृष्ण-मार्जित मृद्भाण्ड के टुकड़े प्रकार एवं बनावट में अलग नहीं मालूम होते हैं। लाल मृद्भाण्ड टुकड़ों के ढाँचों से अनेक प्रकार के बर्तनों के आकार-प्रकार के विषय में स्पष्टता होती है। इनके भांड, नाली या द्रोणिका, टोटीदार बर्तनें, मूठयुक्त कड़ाही एवं बर्तनें सछिद्र बर्तबाने (जार्स), ढक्कन वाली छोटी बर्त्तनें, मुठयुक्त ढक्कनें, कलशें आदि के बनावट मिलते हैं। लाल मृद्भाण्ड के कंधे पर बंधे हुए रस्सी की भाँति चित्र स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं साथ ही कुछ बर्तनों पर चटाई, बंशी या कंघी की भाँति छाप मिलते हैं।[२७] इस प्रकार तत्कालीन उद्योग-धंधों, रहन-सहन एवं कलाकारिता के विषय में स्पष्ट जानकारी मिलती है।

उपलब्ध सामग्रियों के आधार पर कहा जा सकता है कि बलिराजगढ़ प्राचीन मिथिलानगर का ध्वंशावशेष है तथा यहाँ सदियों तक एक सुन्दर एवं विकसित नगर स्थापित रहा किन्तु इस स्थल का पूर्ण पुरातात्त्विक उत्खनन एवं शोध होना अत्यावश्यक है। इसके बाद ही इसका गौरवशाली इतिहास उजागर होगा। फिर भी यहाँ से प्राप्त पुरावशेषों से प्राचीन मिथिला एवं बिहार के लोगों के रहन-सहन, वेष-भूषा, उद्योग-धंधे, धार्मिक एवं आर्थिक क्रियाकलापों के विषय में जानकारी मिलती है। कला के क्षेत्र में मूर्त्तिकारों की कुशलता देखने को मिलती है जो स्वर्णकारों की भी कुशलता को प्रतिबिम्बित करती है। इससे स्पष्ट होता है कि मिथिला में शुंगकाल के पूर्व ही अनेक कलाओं का विकास हो चुका था जो मिथिला के इतिहास लेखन के लिए एक महत्त्वपूर्ण सामग्री है।

सन्दर्भ-सूची

१. इण्डियन आर्कियोलोजी—ए रिव्यू, नई दिल्ली, १९६२-६३, पृ. ३-५; १९७२-७३, पृ. ७;१९७४-७५, पृ. १०.

२. ओ. मैले, बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, दरभंगा, १९०७, अध्याय-१५.

३. एफ. बुकानन, एन एकाउण्ट ऑफ पुर्णियाँ रिपोर्ट इन १८०९-१०, बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसायटी, पटना, १९२८, पृ. ८०.

४. डी. आर. पाटिल, एण्टीक्वेरियन रिमेन्स इन बिहार, पटना, १९६३,पृ. ७.

५. इन्द्र नारायण झा, मिथिला दिग्दर्शन, रामगढ़ (राँची), १९८४, पृ. १५२-१५३.

६. उपेन्द्र झा, मिथिलापुरी का अभिज्ञान, दरभंगा, १९८३, पृ. १८.

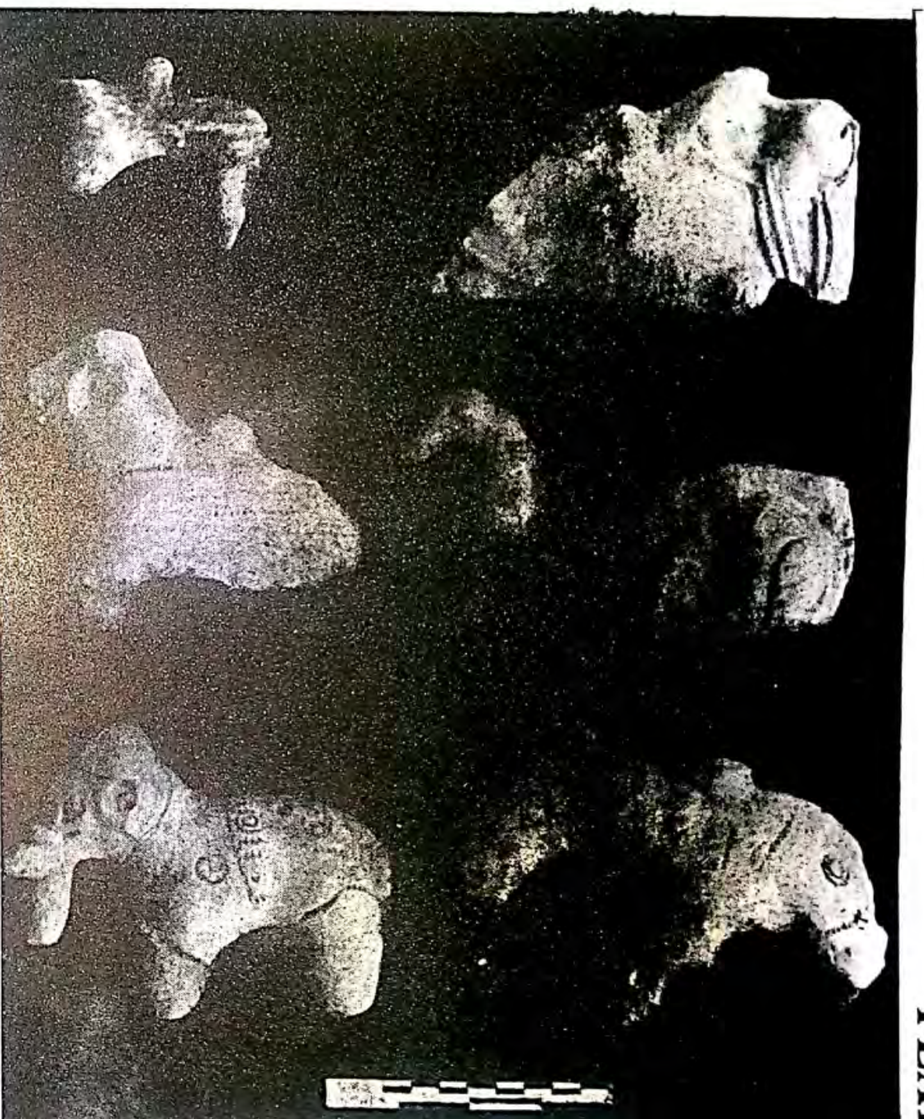
७. रामायण, सं. बासुदेव लक्ष्मण शास्त्री पन्सिकार, चतुर्थ संस्करण, बम्बई, १९३०, I. ५०.१:
ततः प्रागुत्तरां गत्वा राम सौमित्रिणा सह।
विश्वामित्रं पुरस्कृत्य यज्ञवाट मुपागमत्।।

८. म.म. परमेश्वर झा, मिथिला तत्त्वविमर्श, पटना, १९७७, पृ. ४२; ओ. मैले, पूर्वोक्त, पृ.१४१; डी. आर. पाटिल, पूर्वोक्त, पृ.१.

PLATE III

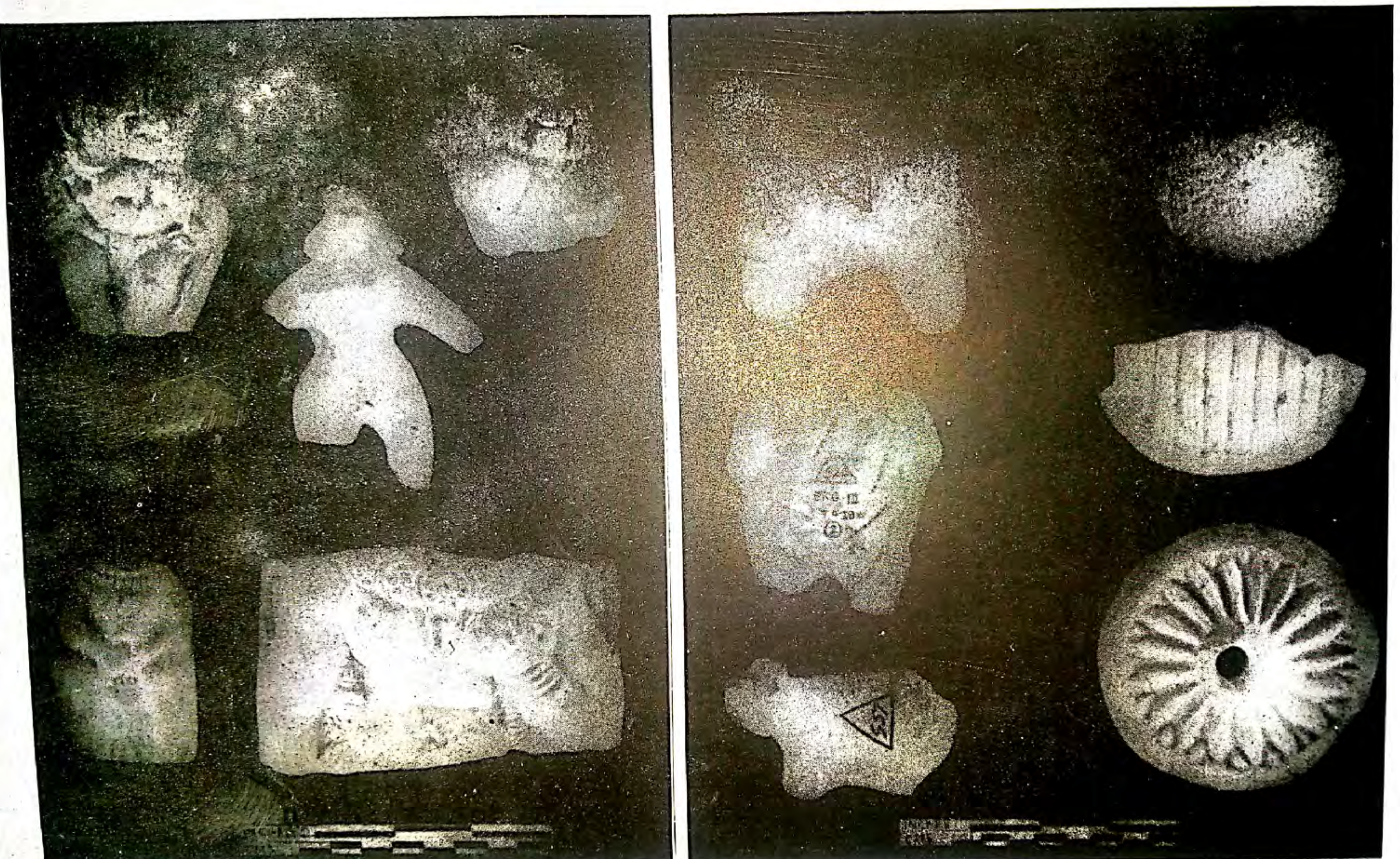


A. Balirajgarh : terracotta human figurines, Period I.



B. Balirajgarh : terracotta animal figurines, Period I.

PLATE IV



A

B

Balirajgarh : terracotta human figurines and objicts.

PLATE V



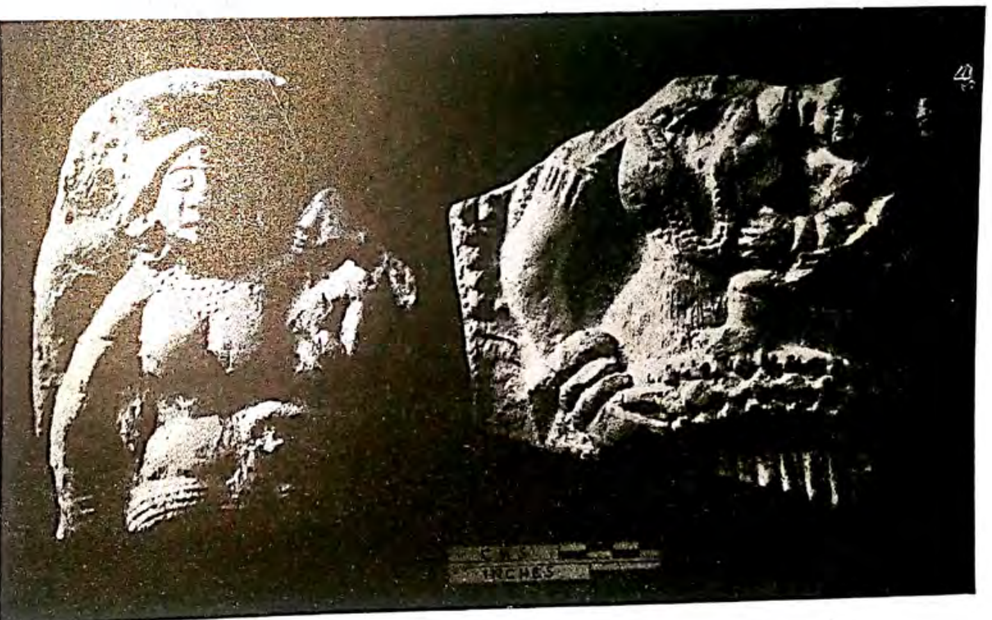
A



B



C



D

Balirajgarh : terracotta figurines.

Courtesy— ASI, New Delhi
for Plate III to V

९. स्कन्दपुराण, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, ९७ :

आसीत ब्राह्मपुरीनाममिथिलायां विराजिता।

यस्यविराजते नित्ये गौतमोनाम तापसः।।

१०. जातक, ई.बी. कॉवेल, कैम्ब्रिज, १९०७,VI. ३२.

११. वही, ३३०.

१२. वही, नं. ५३९, ५४१.

१३. महाभारत, पूना, १९२९-१९३३, XII ३०२-३०८.

१४. जातक, VI नं. ५४१; मज्झिम निकाय, राहुल सांकृत्यायन, सारनाथ, १९३३, II, ८२; महावंश, II.१०.

१५. योगेन्द्र मिश्र, हिस्ट्री ऑफ विदेह, पटना, १९८१, २३३.

१६. वही।

१७. इण्डियन आर्कियोलोजी-ए रिव्यू १९६२-६३, पृ. ३-५.

१८. वही, प्लेट XI.

१९. वही, १९७२-७३, पृ. ७.

२०. डॉ. रामचन्द्र सिंह, अवकाश प्राप्त निदेशक, पुरातत्त्व विभाग उत्तर प्रदेश से व्यक्तिगत सम्पर्क।

२१. डॉ. सीताराम राय, 'बलिराजगढ़: ए यूनिक हिस्टोरिकल साइट', दी हेरीटेज ऑफ इण्डिया, सं. उपेन्द्र ठाकुर एवं युगल किशोर मिश्र, नई दिल्ली, १९७९, पृ. १७८-८०.

२२. इण्डियन आर्कियोलोजी-ए रिव्यू १९७२-७३, पृ. ७.

२३. वही।

२४. वही, १९७४-७५, पृ. १०.

२५. वही।

२६. सीताराम राय, पूर्वोक्त।

२७. वही।

THE JOURNAL OF

THE BIHAR RESEARCH SOCIETY

VOLS. LXXVI—LXXVIII JANUARY—DECEMBER 1990—1992 PTS. I—IV

Platinum Jubilee Volume

Chief Editor

LATE UPENDRA THAKUR



Published by

THE BIHAR RESEARCH SOCIETY

PATNA

THE JOURNAL

OF

THE BIHAR RESEARCH SOCIETY

PLATINUM JUBILEE VOLUME

VOLS. LXXVI-LXXVIII JANUARY - DECEMBER 1990-1992 Pts. I - IV

Chief Editor

LATE UPENDRA THAKUR



PUBLISHED BY

THE BIHAR RESEARCH SOCIETY

PATNA